क्या कलीसिया मसीह का राज्य है?

नये नियम का लगभग 48 प्रतिशत भाग यीशु के जीवन की चर्चा करता है, और शेष 52 प्रतिशत भाग यीशु के जीवन से बनी कलीसिया की चर्चा करता है। अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु ने बार-बार स्वर्ग के राज्य की बात की थी (उदाहरण के लिए, देखिए, मत्ती 4:17)। उसने कलीसिया की स्थापना के दिन के साथ-साथ उस दिन की ओर भी इशारा किया जब स्वर्ग का राज्य स्थापित होना था। क्या वह दो अलग-अलग राज्यों अर्थात सत्ताओं की बात कर रहा था, या एक ही सत्ता की दो प्रकार से बात कर रहा था?

भविष्यवाणी में कलीसिया

यशायाह 2:2-4 ''यहोवा के भवन के पर्वत'' की बात करता है। यह भविष्यवाणी में कलीसिया की तस्वीर है। कलीसिया का अस्तित्व यशायाह के समय में नहीं हो सकता था। उसकी भविष्यवाणी के अनुसार, परमेश्वर का भवन ''अन्त के दिनों में'' बनना था, और सभी जातियों ने इसमें प्रवेश करना था। परमेश्वर का भवन अर्थात घर कलीसिया ही है (1 तीमुथियुस 3:15)।

यीशु ने कहा था, ''मैं ...अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18)। यह दिखाता है कि कलीसिया यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों में नहीं बनी थी और यीशु द्वारा ये शब्द कहते समय भी इसका अस्तित्व नहीं था। मत्ती 18:17 फिर से कलीसिया का उल्लेख करता है। निस्संदेह, कलीसिया के लिए यीशु के निर्देश इसके अस्तित्व में आने के बाद के लिए थे।

नये नियम की कलीसिया तब तक नहीं आ सकती थी जब तक नया नियम नहीं मिला, और नया नियम मसीह की मृत्यु से पहले लागू नहीं हो सकता था (इब्रानियों 9:16, 17)। इसलिए, जब तक मसीह की मृत्यु नहीं हो जाती तब तक कलीसिया अस्तित्व में नहीं आ सकती थी।

प्रभु यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद हम आगे प्रेरितों 2 में कलीसिया

के बारे में पढ़ते हैं। इस अध्याय को ध्यानपूर्वक पढ़ने से पता चलता है कि वहां होने वाली घटनाओं के परिणामस्वरूप उस दिन कलीसिया की स्थापना हुई थी। उस दिन सबसे पहले सुसमाचार का प्रचार किया गया था। लोगों को बताया गया था कि उद्धार पाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए (प्रेरितों 2:38)। उस दिन तीन हज़ार लोग उनमें मिलाए गए थे (आयत 41), और उसके बाद उद्धार पाने वाले दूसरे लोग प्रतिदिन कलीसिया में मिलाए जाते थे (आयत 47)।

इसके बाद, कलीसिया के आने की कभी भी भविष्यवाणी नहीं हुई, बल्कि इसे अस्तित्व में माना गया। यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि इसकी स्थापना ''अन्त के दिनों'' में होगी; और पिन्तेकुस्त के दिन अपने प्रवचन में पतरस ने घोषणा की थी कि उस दिन की घटनाएं योएल की भविष्यवाणी का पूरा होना था (आयत 16), जिसके ''अन्त के दिनों में'' होने की भविष्यवाणी योएल ने की थी (आयत 17)। कलीसिया की स्थापना अन्त के दिनों में हुई थी, और हम अभी भी ''अन्त के दिनों'' अर्थात समय के अन्तिम काल में रह रहे हैं। फिर योएल के अनुसार, परमेश्वर के भवन में सभी जातियों के लोगों ने आना था। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने कहा कि यह प्रतिज्ञा यहूदियों के लिए थी जिनके साथ वह बात कर रहा था और ''सब दूर-दूर के लोगों के लिए'' थी (आयत 39)। कलीसिया में सभी जातियों को परमेश्वर में मिलाया जाता है (इफिसियों 2:14-16)।

राज्य का आरम्भ

आइए उन वाक्यों की समीक्षा करें जिनमें राज्य की बात है।

1. दानिय्येल 2:44 में हम पढ़ते हैं कि रोमी राजाओं के दिनों में राज्य की स्थापना होनी थी।

2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का प्रचार था कि राज्य ''निकट'' है (मत्ती 3:2)।

3. अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान, यीशु ने कहा था कि परमेश्वर का राज्य ''निकट'' है (मरकुस 1:15; देखिए मत्ती 10:5-7; लूका 10:9)।

4. मसीह के जी उठने के बाद, चेलों ने उससे राज्य के बारे में और बातें पूछीं। उसने प्रतिज्ञा की, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे'' (प्रेरितों 1:8)। इससे हमारे दिमाग में एक और प्रतिज्ञा आ जाती है जो उसने पहले की थी: ''और उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे'' (मरकुस 9:1)।

5. हमें पुन: प्रेरितों 2 में उस दिन पर लाया जाता है, जब आत्मा उतरा था। आत्मा के मिलने से प्रेरितों पर सामर्थ आनी थी (प्रेरितों 1:8)। राज्य ने कुछ प्रेरितों के जीवनकाल के समय में ही आ जाना था। और भी बड़ी बात, इसने सामर्थ के साथ आना था (मरकुस 9:1)। इसलिए, जैसा कि प्रेरितों 2 में लिखा गया है, राज्य पिन्तेकुस्त के दिन ही आया था। इस दिन की सम्पूर्ण घटनाएं राज्य की स्थापना से सम्बन्धित भविष्यवाणियों के साथ मेल खाती हैं।

क्या कलीसिया ही राज्य है?

कलीसिया के आरम्भ से सम्बन्धित सभी भविष्यवाणियां प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन अपने उच्चतम उत्कर्ष को प्राप्त करती हैं। राज्य की स्थापना से जुड़ी सभी भविष्यवाणियों के बारे में भी यही बात सत्य है। इस कारण हमें एक निर्णय लेना पड़ा। हम दो सम्भावित निर्णयों में से एक पर पहुंच सकते हैं: या तो उस दिन दो सस्थानों की स्थापना हुई थी या ये भविष्यवाणियां एक ही संस्थान की बात कर रही थीं। आइए नीचे दिए प्रमाणों पर विचार करते हैं।

पहला, कलीसिया तथा राज्य उन्हीं लोगों से बनते हैं। प्रकाशितवाक्य 1:4-6 में, यूहन्ना ने एशिया की सात कलीसियाओं को सम्बोधित किया। उसने कलीसिया के इन सदस्यों को बताया कि वे एक राज्य हैं।

उसके बाद, आइए इब्रानियों 12 अध्याय में देखते हैं। आयत 23 कहती है कि उस पत्री के पाठक कलीसिया में आए थे। आयत 28 कहती है कि उन्हें राज्य मिला था।

हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु कलीसिया का सिर और राज्य का राजा है। परन्तु, हमें बताया गया है कि उसकी केवल एक ही देह है (इफिसियों 4:4) सो राज्य और कलीसिया अवश्य ही एक होने चाहिए। वरना, दो देहें हो जाएंगी।

यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उसकी मेज़ राज्य में होगी (लूका 22:29, 30)। विशेष भोज जिसकी उसने स्थापना की थी बाद में चेलों के द्वारा खाया गया जो कि कलीसिया में सम्मिलित थे (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11)। यह पुन: दिखाता है कि कलीसिया ही राज्य है।

परमेश्वर के घराने अर्थात कलीसिया को लिखते हुए (1 पतरस 2:6; 4:17; 1 तीमुथियुस 3:15), पतरस ने उस घराने के सदस्यों को बताया कि उनका नया जन्म हुआ है (1 पतरस 1:23)। यूहन्ना 3:3 दिखाता है कि राज्य में प्रवेश करने के लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। फिर तो, वह प्रक्रिया जिससे कोई राज्य में प्रवेश करता है, वही है जो कलीसिया के सदस्य बनने के लिए पूरी की जाती है (प्रेरितों 2:47)। प्रत्येक पापी को उद्धार पाने के लिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। क्योंकि कलीसिया ही राज्य है, इसलिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना जल और आत्मा से जन्म लेने के समान ही है (यूहन्ना 3:5)।

सारांश

कलीसिया ही राज्य है। ''कलीसिया'' शब्द संसार से इसके अलग होने पर ज़ोर देता है। ''राज्य'' ज़ोर देता है कि यह प्रभु यीशु मसीह द्वारा संचालित और शासित बुलाए हुए लोगों की देह है। यह उद्धार पाए हुए लोगों से बनती है जिन्हें संसार में से बुलाया गया है। ये लोग इसके नागरिक हैं और उन्हें इसके नागरिक होने के अधिकार और आशिषें प्राप्त होती हैं।